"मैं हमेशा अंगदान कार्ड अपने पास रखता हूँ। इस पर लिखा है कि मेरी मृत्यु के बाद मेरे पूरे शरीर का उपयोग अंगदान और डाक्टरी शोध कार्य के लिए किया जा सकता है। मैं अधिक से अधिक लोगों को भी यही काम करने के लिए प्रोत्साहन दूँगा।"

डाक्टर बाल मुकुंद भल्ला
को-आर्डीनेटर हिंदु इंटरनेशनल मैडीकल मिशन,
भूतपूर्व अध्यक्ष, हिंदु कौंसिल यू के।

अंगदान महादान है परंतु और बहुत से और दानियों की आवश्यकता है

नेकी का काम कोई भी कर सकता है

कृपया
- अपने परिवार से बात करें
- अपनी इच्छाएं रजिस्टर करवाए.
- अंगदान कार्ड अपने साथ रखें

अंगदान के बारे में अधिक जानकारी लेने के लिए, या ऐन ऐच ऐस के अंगदानियों के रजिस्टर में शामिल होने के लिए इनके साथ संपर्क करें –

ओगर्न डोनर लाईन
0845 60 60 400
www.uktransplant.org.uk

हिंदु धर्म के बारे में जानकारी इस वेबसाईट से प्राप्त की जा सकती है –
www.bbc.co.uk/religion

नये अंग लगाने से जीवन की रक्षा होती है

Compiled by Rachel Howitt, Bradford Hospitals NHS Trust
Produced by UK Transplant, Fox Den Road, Stoke Gifford, Bristol BS34 8RR
© UK Transplant April 2003

UK Transplant

हिंदु धर्म और अंगदान

अंगदान और हिंदु धर्म के सिद्धांतों के बारे में जानकारी

Hindu Dharma
and organ donation
Hindi

अंगदान करना (ओर्गन डोनेशन)

अंगदान का अर्थ है अपने शरीर का कोई भाग किसी अन्य व्यक्ति को दान देना जिसके शरीर में यह नया अंग लगाने की ज़रूरत हो। अंगदन से हर वर्ष सैंकड़ों लोगों की जान की रक्षा होती है। अधिकतर अंग उन लोगों द्वारा दान किए जाते हैं जिनकी मृत्यु हो जाती है। फिर दिल, फेफड़े, गुर्दे, जिगर, पाचन ग्रंथी और छोटी आँत जैसे अंद दान किए जा सकते हैं। चमड़ी, हड्डी, दिल के वाल्व और आँखों जैसे अंगों का उपयोग भी अन्य लोगों की मदद करने के लिए किया जा सकता है।

अंगदान का काम कब किया जा सकता है?

डाक्टर और नर्सें किसी व्यक्ति की जान बचाने के लिए हर कोशिश करने के लिए वचन-बद्ध होते हैं। दान के लिए अंग तभी निकाले जाते हैं जब यह निश्चित हो जाए कि किसी की मृत्यु हो चुकी है। मृत्यु हुई निश्चित करने का काम जो डाक्टर करता है वह अंग निकालने वाली टीम से पूरी तरह स्वतंत्र होता है।

दान देने के लिए अधिकतर अंग ऐसे मरीज़ों के निकाले जाते हैं जिनकी मृत्यु अस्पताल में इन्टैंसिव केअर यूनिट में वैंटीलेटर पर दिमाग़ को गंभीर चोट लगने के कारण होती है। दिमाग़ की चोट से दिमाग़ के आधारभूत भाग में जीवन को कायम रखने वाले भागों को क्षति पहुँचती है। जिस व्यक्ति के दिमाग़ के आधारभूत भाग की मृत्यु हो जाए उसे जीवित नहीं रखा जा सकता। टैस्ट करने से यह बात निश्चित हो जाती है कि दिमाग़ की मृत्यु कब हुई है।

जिन लोगों की मृत्यु अस्पताल में होती है, परंतु वैंटीलेटर पर नहीं, वे भी कई बार अंगदान कर सकते हैं। इन्हें दिल की गति बंद होने वाले दानी कहा जाता है।

जिन लोगों की मृत्यु अस्पताल में नहीं होती, वे भी कई बार शरीर के कुछ भाग दान कर सकते हैं।

अनुमति

किसी मृतक व्यक्ति के अंग निकालने से पहले हमेशा उसके निकट सम्बंधियों से अनुमति ली जाती है या उन्हें पूछा जाता है कि क्या उन्हें कोई आपत्ति तो नहीं। इस लिए यह बहुत ज़रूरी है कि लोग अपने प्रिय लोगों को अपनी इच्छाएं बता दें। अंगदान करना किसी व्यक्ति की अपनी इच्छा के अनुसार होता है, और किसी एक धर्म को मानने वालों के विचार भी अलग अलग हो सकते हैं। अंगदान का समर्थन करने वाले कई परिवारों ने हमें बताया है कि उन्हें हुए घाटे से यदि किसी का भला हो जाए तो यह अच्छी बात है।

ध्यान और सम्मान

अंग निकालने का काम बहुत ही ध्यान और सम्मान से किया जाता है। परिवार वाले बाद में शरीर को देख सकते हैं और यदि परिवार चाहें तो किसी मंदिर के पंडित या स्थानीय धार्मिक नेता से भी संपर्क किया जा सकता है।

हिंदु धर्म और अंगदान

हिंतु धर्म ग्रंथों में बहुत सी ऐसी बातें मिलती है जिनसे अंगदान का समर्थन होता है। *दान* मूल संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ है किसी को निस्स्वार्थ भाव से कुछ देना। *नियमों* (अच्छे कामों) में दान का तीसरा स्थान है।

"जिन वस्तुओं का दान किया जा सकता है उनमें शरीर का दान सबसे उत्तम है।"
मनुस्मृति

हिंदुओं का यह दृढ विश्वास है कि शरीर की मृत्यु के बाद भी अगला जन्म लेने के लिए आत्मा क़ायम रहती है। कर्म के नियम के अनुसार यह निश्चित होता है कि आत्मा कहाँ जाएगी। भगवद्गीता में कहा गया है कि अमर आत्मा का नश्वर शरीर के साथ सम्बंध वैसा ही है जैसा शरीर का सम्बंध वस्त्रों के साथ है।

"वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृहणाति नरोऽपराणि
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि
संयाति नवानि देही।"

"जैसे कोई व्यक्ति पुराने वस्त्रों को त्याग कर
नये वस्त्र पहन लेता है,
वैसे ही आत्मा व्यर्थ हो गए पुराने शरीर
को त्याग कर नया शरीर धारण कर लेती है।"
भगवद्गीता, अध्याय 2:22

वैज्ञानिक और आयुर्वेद के ग्रंथों (*चरक और सुश्रुत संहिता*) को भी वेदों का अभिन्न अंग माना जाता है। *ऋषि चरक* ने शरीर में जाने वाली औषधियों के बारे में और *ऋषि सुश्रुत* ने शरीर के अंगों के बारे में तथा एक व्यक्ति के शरीर के अंग किसी अन्य शरीर में लगाने के बारे में लिखा है।

"हिंदुओं के लिए सबसे बड़ी बात यह है कि जिस काम से जीवन की भलाई हो उसे धर्म मान कर उसका प्रचार किया जाना चाहिए। अंगदान हमारे जीवन का अभिन्न अंग है।"
हसमुख वेलजी शाह, इंटरनेश्नल ट्रस्टी, वर्ल्ड कौंसिल ऑफ़ हिंदूज़

"अंगदान हिंदु धर्म के नियमों के अनुसार उत्तम काम है, क्योंकि इससे अन्य लोगों के जीवन की रक्षा की जा सकती है।"
मिस्टर ओम प्रकाश शर्मा, अध्यक्ष, नेश्नल कौंसिल ऑफ़ हिंदु टैम्पल्ज़